International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 11 Issue 07, July 2021
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

हिमालय क्षेत्र–नेपाल : भारत की प्रथम रक्षा पंक्ति

शा"िकान्त राव
असिसटेंट प्रोफेसर
राजनीति विज्ञान विभाग, ही0रा0पी0जी0 कालेज, खलीलाबाद, संत कबीर नगर।

प्रो0 बजे"ा कुमार त्रिपाठी
प्राचार्य, ही0रा0पी0जी0 कालेज, खलीलाबाद, संत कबीर नगर।

भारत और नेपाल सम्बंध एतिहासिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक और आर्थिक जुड़ाव पर आधारित हैं और इन्हीं कारणों से सदा एक दूसरे को प्रभावित करते रहे हैं। किसी भी भारतीय को नेपाल विदे"ा नहीं लगता और न ही किसी नेपाली को भारत पराया लगता है। दोनों दे"ाों में रोटी–बेटी के रि"ते सदियों पुराने हैं।

द्वितीय वि"व युद्ध के बाद वै"वक उथल पुथल और उपनिवे"ाों की स्वतंत्रता जैसी अनेक वि"ोष परिस्थितियों में भारत और नेपाल ने मैत्री सन्धि 1950 द्वारा यह संकल्प लिया कि वे शान्ति और मैत्री की राह पर चलेंगे,[1] लेकिन चीन ने अपना प्रभाव बढ़ाते हुए सदा ही इस संबंध को प्रभावित करने का प्रयास किया। यह चीन का ही प्रभाव था कि 1962 के भारत–चीन युद्ध के समय नेपाल ने भारत पर चीनी आक्रमण पर तटस्थ दृष्टिकोण अपनाते हुए चीन के प्रति अप्रत्यक्ष रूप से सहानुभूति प्रकट की। 1964 म भारतीय विदे"ा मंत्री सरदार स्वर्ण सिंह एवं सत्ता में आने के बाद श्रीमती इंदिरा गॉधी ने नेपाल के साथ सम्बंधों को सुधारने की नीति अपनाते हुए नेपाल में कई परियोजनाओं की शुरुआत करते हुए नेपाली जनमानस में भारत के प्रति भावनात्मक लगाव उत्पन्न करने का प्रयास किया। [2]

1974 में सिक्किम को भारत के सहराज्य के दर्जे को लेकर नेपाल को स्वतंत्र दे"ा के रूप में अपना भविष्य खतरे में दिखने लगा। नेपाल को यह डर सताने लगा कि कहीं भारत सिक्किम की तरह उसे भी अपना राज्य बनाने का प्रयास तो नहीं करेगा। इसलिए राजा विरेन्द शाह ने सिक्किम के सहराज्य के दर्जे का खुलेआम विरोध किया। जिससे दोनों दे"ाों के मध्य दूरी बनी। लेकिन महाराजा ने कूटनीतिक माध्यम से भारत से पुनः मधुर सम्बंध बनाने का आग्रह किया।[2]

1990 से पहले की नेपाली राज"ाही चीन परस्त ज्यादा थी, इसीलिए पूरे नेपाल मे भारत विरोधी भावनायें भड़कती रहीं। परन्तु अप्रैल 1990 में नेपाल में लोकत्रांतिक क्रान्ति के कारण दलविहीन पंचायती व्यवस्था की जगह बहुदलीय लोकतांत्रिक व्यवस्था की स्थापना हुई और लोकतांत्रिक सरकार का गठन हुआ जिससे भारत का एकतरफा विरोध खत्म हुआ और भारतोय पक्ष में बाते होनी प्रारम्भ हो गयीं, जिससे दोनों दे"ाों के मध्य तनाव में ि"ाथिलता आई। फलतः दोनों दे"ाों ने एक दूसरे को कई सौगातें दी और प्रतिबंध हटा लिये और बंद सीमायें खोल दी गयीं। नेपाल ने भारत के प्रति अपनी वफादारी सिद्ध करते हुए चीन स हथियार खरीद का सौदा रद्द कर दिया।

1997 में नेपाल नरे"ा भारत आये और भारत के साथ आर्थिक, राजनीतिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में सहयोग प्रारम्भ कर दिया। नेपाल को अपना महत्व पता था, इसलिए वह लगातार दबाव बनाते हुए भारत के साथ अपनी मर्जी और अपने हिसाब से संधियां करता रहा और भारत से भारी रियायतें लेता रहा, परन्तु अपने स्वतंत्र अस्तित्व का बोध भारत को कराते रहने में कभी नहीं चूका।[3]

2008 में नेपाल में 240 वर्षों से चली आरही राज"ाही का पतन होगया और लोकतंत्र की स्थापना हुई। परन्तु चीनी प्रभाव के कारण माओवादी सरकार सत्ता में आयी, जिसने भारत विरोधी रूख अपनपाते हुए चीन के साथ पींगे बढ़ना शुरू कर दिया परन्तु जल्द ही इस सरकार का पतन हो गया और लोकतांत्रिक शासन स्थापित हो गया, जो भारत के साथ मैत्रीपूर्ण संबंधों की इच्छुक है। नेपाल में नय संविधान का गठन किया जाना है जिसमें भारत हर प्रकार का सहयोग प्रदान कर रहा है।

भारतीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी 3–4 अगस्त, 2014 को अपनी दो दिवसीय यात्रा पर नेपाल गए। पड़ोसी दे"ाों को अपनी विदे"ा नीति की प्राथमिकता में रखते हुए मोदी 17 वर्षों के बाद नेपाल की यात्रा पर जाने वाले पहले भारतीय प्रधानमन्त्री बने।[4] नेपाल में बढ़ रही चीन की रूचि को देखते हुए इस यात्रा का महत्व कई गुना बढ़ गया।

नेपाल भी भारतीय प्रधानमंत्री के स्वागत से पीछे नहीं हटा, नेपाली प्रधानमंत्री ने प्रोटोकॉल तोड़ते हुए भारतीय प्रधानमंत्री का स्वागत किया, नेपाल की संसद को रविवार को भी खोला गाया जहॉ भारतीय प्रधानमंत्री ने संसद को संबोधित किया। नेपाल ने नरेन्द्र मोदी के आगमन पर दो दिनों का राष्ट्रीय अवका"ा तक घोषित कर दिया। नेपाल की संविधान सभा को नेपाली भाषा में शुरू किए गए अपने भाषण से 500 सांसदों को संबोधित करते हुए भारतीय प्रधानमंत्री ने स्पष्ट किया कि भारत की मं"ाा नेपाल के आन्तरिक मामलों में दखल देने की नहीं है, बल्कि मदद करने की है। नेपाल को 'वीरों की भूमि' बताते हुए मोदी ने भारत के लिए नेपाली गोरखाआ के बलिदान को भी याद किया। इसके साथ प्रधानमंत्री ने नेपाल को 10000 करोड़ नेपाली रूपये की रियायती कर्ज सुविधा उपलब्ध कराने की घोषणा की।[5]

दोनों दे"ाों के प्रधानमंत्रियों ने आपस में वार्ता द्वारा वर्ष 1950 की शान्ति एवं मैत्री सन्धि तथा अन्य द्विपक्षीय करारों की समीक्षा करने, समायोजित करने एवं अद्यतन करने को लेकर सहमति बनी। दोनों नेताओं ने संयुक्त आयोग के उस निर्णय का स्वागत किया जिसमें दोनों दे"ाों के विदे"ा सचिवों को आपस में बैठक करने तथा वर्ष 1950 की शान्ति एवं मैत्री सन्धि को स"ोधित करने के वि"ाष्ट प्रस्ताव पर चर्चा करने का निर्दे"ा दिया गया। दोनों दे"ाों के बीच प्रधानमन्त्री नरेन्द्र मोदी की यात्रा के अन्तिम दिन बिहार के रक्सौल से नेपाल के अमलेख गंज के बीच 81 किमी लम्बी तेल पाइपलाइन बिछाए जाने पर भी सहमति बनी है, जिसपर 200 करोड़ के खर्च का अनुमान लगाया गया है।[6]

विवाद के मुद्दे

भारत और नेपाल की पूरी सीमा पूर्णतः खुली है जहॉ से तस्करी की घटनाऍ आम हैं इसे लेकर आ"ांकाऍ तथा विवाद बने रहे है।[7] नेपाल में भारत के प्रभाव को लेकर भी विवाद रहा है। नेपाली कॉग्रेस के अधिका"ा नेताओं के भारत के राष्ट्रीय राजनेताओं से अच्छे सम्बन्ध रहे जबकि चीनी प्रभाव के कारण नेपाल के वामपन्थी हमे"ाा से भारत विरोधी रहे।

नेपाल तथा भारत के बीच नदी जल बॅटवारे को लेकर विवाद रहा हैं बिहार तथा उत्तर प्रदे"ा की अधिका"ा नदियॉ नेपाल से निकलतो हैं। नेपाल द्वारा जल संसाधनों का समुचित उपयोग तथा प्रबन्धन नहीं करने से भारत को वर्षा के समय बाढ़ तथा गर्मी में सूखे का सामना करना पड़ता है।[8]

नया नेतृत्व, नये बदलाव

भारत की विदे"ा नीति में बड़ा परिवर्तन तब देखने को मिला जब 2014 में दिल्ली में नयी सरकार आई। अब विदे"ा नीति का लक्ष्य भारत के पड़ोसी राज्यों पर खास ध्यान देना है। इसकी पुष्टि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के शपथ ग्रहण समारोह में सभी सार्क सदस्य के नेताओं को आमंत्रित किए जाने से होती है। इससे स्पष्ट संदे"ा दिया गया कि किसी और चीज से ज्यादा महत्वपूर्ण है पड़ोसी राष्ट्रों से अच्छे सम्बंध बनाना हैं। अपने कार्य काल के पहले छः महीने के अंदर भारतीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी पाकिस्तान और भूटान की यात्रा पर गये जिससे प्राथमिकताओं में बदलाव साफ झलकता है। भारत पर भूटान के नारे के साथ ही यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया कि भारत अपने छोटे पड़ोसी राष्ट्रों पर सुरक्षा, उर्जा और विकास के सम्बंध में उन्हीं के बराबर आश्रित है जैसा कि वो भारत पर आश्रित हैं।[9] यह भारत की पड़ोसी राष्ट्रों के प्रति एकदम नई नीति मानी जा सकती है। पहले की सोच की अपेक्षा खास कर भूटान और नेपाल के सम्बन्ध में किसी और दे"ा की तुलना में दोनों भारत पर अधिक आश्रित हैं। ऐसे बदलाव भारत की समृद्धि और उर्जा आव"यक्ताओं के कारण आये हैं। शंतिपूर्ण भारत अब अपने छोटे पड़ोसियों को आर्थिक वृद्धि और महा"ाक्ति के रूप में उदय के लिये सहयोगी बनाने पर विचार कर रहा है।

हिमालयी क्षेत्र की रक्षा पंक्ति के रूप में नेपाल

भारत की स्त्रातेजिक सोच के तहत हिमालय एक प्राकृतिक अवरोध है, जिसे चीन द्वारा क्रमिक रूप से मूलभूत ढांचे का विकास करके अतिक्रमित किया जा रहा है। चीन ने ट्रांस हिमालय रेलवे द्वारा भारत की उत्तरी सुरक्षा ढांचे के लिए खतरा उत्पन्न किया है, और चीनी अर्थव्यवस्था, संस्कृति

और राजनीतिक रूप से नेपाल से धुल मिल रही है। चीन की खुली घोषणा के तहत वो इन रेलवे लाइनों का प्रयोग स्त्रातेजिक उद्दे"य के लिए भी करेगा, के कारण नेपाल और भूटान दोनों का महत्व भारत के लिए बढ़ जाता है। चीन का कहना है कि चीनी रेल नेटवर्क से नेपाल, सिक्किम और भूटान की सीमा को जोड़ा जायेगा। चीन के अनुसार यह रेल लाइन पर्यटन, परिवहन, खनिजों की ढुलायी जैसे मुख्य कार्यों और सैन्य साजोसामान का सीमा पर ले जाने मे सुविधा प्रदान करेगी। इस कारण हिमालयी क्षेत्र ने भारत की प्रथम रक्षा पंक्ति होने का दर्जा खत्म हो गया है।[10]

आज पारंपरिक से अधिक गैर पारम्परिक खतरे सम्बंधों को अधिक प्रभाव"ाली रूप से प्रभावित कर रहे हैं, जो भारत और नेपाल के लिए बड़ी चुनौती बन कर उभरे है। इसलिए भारत–नेपाल के मध्य सुरक्षा सहयोग नेपाल से किस स्तर पर होना चाहिए इसपर विचार करना होगा।

आर्थिक और सैन्य रूप में मजबूत नेपाल भारत की उत्तरी सीमा सुरक्षा के लिए बहुत ही महत्वपूर्ण है। कोई भी वि"वासपात्र, राजनीतिक रूप से स्थिर और स्वतंत्र राष्ट्र अपने भूक्षेत्र को बाहरी बल के प्रयोग के लिए नहीं देगा। इन परिस्थितियों में भारत नेपाल के उत्तरी सीमा को अपनी सुरक्षा की प्रथम पंक्ति बना सकता है।

नेपाल एक संप्रभू और स्वतंत्र राष्ट्र है। अपनी सीमित क्षमता, कम संसाधन और खुली सीमा के कारण नेपाल सदैव अपने आपको सदा खतरे में पाता है। इसे मजबूत बनाकर ही भारत अपने आपको सुरक्षित रख सकता है। नेपाल की ताकत को भारत की ताकत और भारत की ताकत को नेपाल की ताकत बनाने की आव"यक्ता है।[11]

ऐतिहासिक और समकालीन अनुभव दोनों प्रमाणित करते हैं कि उग्र राष्ट्र संप्रभुता, प्रादे"िाक अखंडता के सम्बंध में संयुक्त राष्ट्र के युद्ध के समय संघर्ष रोकने के संकल्प को ध्यान में नहीं रखता। संयुक्त राष्ट्र भी इस तरह के उग्रता पर मौन रहता है और तटस्थ दे"ाों की संप्रभुता को बचाने में नाकाम रहा है।

इस संदर्भ में कौन यह जिम्मेदारी लेगा कि नेपाल के साथ ऐसा नहीं होगा जब भविष्य में चीन और भारत के बीच संघर्ष होगा और भारत को रोदने के लिए चीन नेपाल को नहीं रौंदेगा। 1962 के अनुभव और चीन द्वारा अक्रामक अभियान के आधार पर भारत अब खतरा नहीं लेना चाहता। इसीलिए भारत सैन्य और आर्थिक क्षमता बड़ाने में हिमालयी दे"ा की मदद करते हुए सैन्य सहायता, गुप्तचरी और पुलिस स्तर की मजबूत सुरक्षा नेपाल को प्रदान करता है।

नेपाल की मुख्य समस्या यह है कि वह भारत और चीन के मध्य फंसा हुआ है और उसे दोनों दे"ा अपने फायदे को ध्यान में रखते हुए अपने नियंत्रण में रखना चाहते हैं। नेपाल के लिए भारत सच्चा मित्र भले ही है लेकिन वो चीन को नाराज नही करना चाहता। दूसरी तरफ जब भी भारत और नेपाल के मध्य मनमुटाव होता है तो इसका नुक्सान दोनों को ही होता है। नेपाल को जहां आर्थिक परे"ाानी का सामना करना पड़ता है वहीं भारत के खिलाफ जहर उगलने का मौका चीन और पाकिस्तान को मिल जाता है, जिसके सहारे वे नेपाल में अपनी मजबूत स्थिति बनाते है। इसी तरह की परिस्थितियों का फायदा उठाते हुये चीन ने नेपाल में भारत के मुकाबले शस्त्र एवं व्यापार संतुलन में बढ़त हासिल कर ली है। इसके बावजूद नेपाल भारत पर प्रभुत्ववाद का आरोप लगाता रहता है।

निश्कर्श

नेपाल संप्रभु स्वतंत्र दे"ा है और भारत के साथ तमाम सांस्कृतिक समानताओं के बावजूद उसके अपने राष्ट्रीय हित हैं जिनका हमे"ाा भारत के हितों के अनुकूल बने रहना सम्भव नहीं। यह भारत की जिम्मेदारी है कि वह कैसे नेपाली जनमनास और नेपाली नेतृत्व को अपने पक्ष में करता है, अगर भारत इसमें असफल रहा तो ये भारत के लिये आत्महत्या के बराबर होगा। आज भारत के लिए पाकिस्तान ही नहीं चीन भी एक बड़ा खतरा है जिसने अपनी चालबाजियों से म्यामार, श्री लंका, बांग्लादे"ा और पाकिस्तान को अपने पक्ष में करके भारत के लिये खतरा पैदा कर दिया है। चीन के नि"ाने पर नेपाल भी है इसीलिये वह नेपाल को भारी मदद देते हुए भारत के खिलाफ भड़का रहा है। इससे भारत बुरी तरह प्रभावित होगा और चीन भारत के मस्तक पर खड़ा हो सकता है। मित्र अगर शत्रु बनजाये तो इससे बुरा कुछ भी नहीं, इसीलिये भारत को अपने सभी पडोसी दे"ाों को अपने साथ लाना होगा जिसमें नेपाल का स्थान महत्वपूर्ण है। मजबूत नेपाल ही भारत के लिए

मजबूत ढाल है जो चीन को आसानी से भारत से दूर रखेगा और हिमालयी क्षेत्र में नेपाल का भारत की प्रथम रक्षा पंक्ति होने का दर्जा बना रहेगा।

नेपाल के मन में चीन का डर रहता है क्योंकि वह भारत से कई गुना शक्ति"ाली है। यदि नेपाल भारत के साथ मजबूती से खड़ा होता है तो चीन नेपाल या भारत की तरफ बुरी नजर से देखने का दुस्साहस नही करेगा। दूसरी तरफ नेपाल के मन में भारत के प्रति जो शंका है उसे भारत को प्रभावी रूप से दूर करना होगा की भारत नेपाल पर अपना प्रभुत्व नही जमायेगा बल्कि इन्हें अपने साथ लेकर सहभागी की तरह चलेगा। भारत ने तिब्बत को चीन को सौंप के जो गलती की वैसा कोई भी कार्य भारत को अब नहीं करना है, नेपाल की तरफ से चीन और पाकिस्तान दोनों को दूर रखना है

नेपाल को भारत का इजराइल बनाना होगा जहां से भारत अपने विरोधियों पर नजर रख सके और अपने आप से दूर रख सके। नेपाल के साथ भारत की 1753 किलोमीटर की सीमा रेखा है, वहीं नेपाल की चीन के साथ 1415 किलोमीटर की सीमा रेखा है। अगर भारत नेपाल पर ध्यान नहीं देता है तो उसे भविष्य में भारत–नेपाल की 1753 किलोमीटर की सीमा पर भारी सैन्य जमाव करना पड़ जायेगा क्योंकि चीन अपना प्रभाव नेपाल में आसानी से बना लेगा और यदि भारत नेपाल को साधने में सफल हो जाता है तो चीन को हम चीन–नेपाल सोमा पर रोकने मं सक्षम हो जायेंगे। सीमा से दु"मन जितना दूर हो उतना ही अच्छा है।

संदर्भ ग्रंथ

1. Exchange of letters with the Treaty, Kathmandu, July 31, 1950. Details of the letter is available in S.D. Muni, *India and Nepal: A Changing Relationship*, Konark Publishers Pvt Ltd, Delhi, 1992, p. 191.
2. राष्ट्रीय रक्षा और सुरक्षा, डा0 लल्लन सिंह जी, पृष्ठ संख्या 548.
3. अंर्तराष्ट्रय सम्बंध, डा0 दीनानाथवर्मा, पृष्ट संख्या 423.
4. दैनिक जागरण, 4 अगस्त 2014.
5. 'Modi conclude historocal visit to Nepal' www.timesofindia.indiatimes.com
6. ' Huge Indian Package for Nepal during Modi visit' www.timesnow.tv
7. India's Neighbourhood, Challenges In The Next Two Decades Institute For Defence Studies & Analyses, New Delhi pg 148.
8. 'The Right of the River', interview with Dipak Gyawali in *Himal South Asian*, March 2011, available at http://www.himalmag.com/component/content/article/4312 theright of-the-river.html, accessed April 10, 2011
9. Mutual Assured Security: India-Nepal Security Cooperation to Mitigate Common Threats, Nihar R Nayak, Asian Strategic Review 2015, India as a Security Provider pg 113.
10. India's Neighbourhood, Challenges In The Next Two Decades Institute For Defence Studies & Analyses, New Delhi pg 149.
11. Mutual Assured Security: India-Nepal Security Cooperation to Mitigate Common Threats, Nihar R Nayak, Asian Strategic Review 2015, India As A Security Provider Pg 113.